शोधामृत
(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No- 67-76
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :

विक्रान्त कौशिक
बाबू कामता प्रसाद जैन महाविद्यालय, (बडौत).

Corresponding Author :

विक्रान्त कौशिक
बाबू कामता प्रसाद जैन महाविद्यालय, (बडौत).

भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं एनईपी 2020 का समीक्षात्मक अध्ययन

उद्देश्य : भारतीय शिक्षा प्रणाली परंपरा और आधुनिकीकरण का मिश्रण है, जो तेजी से बदलती दुनिया की मांगों को पूरा करने के लिए विकसित होने के साथ-साथ चुनौतियों से जूझ रही है। साथ ही यह देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को प्रतिबिंबित करते हुए विविध शिक्षण पद्धतियों का एक संयोजन है। इसके स्तंभों में से एक की व्यापकता है। प्रतिस्पर्धी माहौल, शैक्षणिक कठोरता को बढ़ावा देना। हालाँकि, इससे अक्सर छात्रों पर अत्यधिक दबाव पड़ता है, जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य से समझौता होता है। जोर दने ग्रेड पर कभी-कभी व्यावहारिक कौशल और समग्र विकास पर प्रभाव पड़ता है। अपनी चुनौतियों के बावजूद, भारतीय शिक्षा प्रणाली एक मजबूत संरचना का दावा करती है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 जैसी पहल कौशल-आधारित शिक्षा, बहु-विषयक पर ध्यान केंद्रित करते हुए प्रणाली के नवीनीकरण का प्रयास करती है। सीखना, और पाठ्यक्रम में लचीलापन और भारत के शैक्षिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण क्षण का प्रतीक है। इसका कार्यान्वयन कई कारणों से होता है, प्रत्येक यह अधिक समावेशी और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी शिक्षा प्रणाली के लिए देश की आकांक्षाओं को दर्शाता है। अध्ययन की भूमिका और महत्व पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

कीवर्ड : प्रतिस्पर्धी माहौल, कौशल-आधारित शिक्षा, सतत विकास।

परिचय : ज्ञान देशों की अर्थव्यवस्थाओं में उत्पादन का बहुत महत्वपूर्ण कारक बन जाता है। अर्थव्यवस्था तय करने में उच्च शिक्षा एक महत्वपूर्ण पहलू है, हर देश में सामाजिक स्थिति, प्रौद्योगिकी अपनाना और स्वस्थ मानव व्यवहार। भारत का उच्च शिक्षा क्षेत्र चीन के बाद दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है। भारत ने 21वीं सदी के अगले दशक के दौरान भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति नामक एक नई शिक्षा नीति विकसित और लागू करने की योजना बनाई है।

(NEP-2020). एनईपी-2020 सकारात्मक और नकारात्मक दोनों चरणों वाली एक उन्नत और क्रांतिकारी रूपरेखा है, जिसे गुणवत्ता

प्रदान करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। समग्र और अनुसंधान-उन्मुख प्रगति की उम्मीद के साथ सभी को उच्च शिक्षा। जैसे-जैसे दुनिया सतत विकास की ओर बढ़ी लक्ष्य (एसडीजी), भारत ने एमडीजी युग से सीखे गए सबक का लाभ उठाते हुए प्रगति की ओर अपना मार्च जारी रखा। एसडीजी ने अधिक व्यापकता प्रदान की ढांचा, विकास और स्थिरता के व्यापक पहलुओं को शामिल करते हुए, राष्ट्रों से बेहतर भविष्य के लिए सहयोग और नवाचार करने का आग्रह करता है।

राष्ट्रीय शैक्षिक नीति (एनईपी-2020) भारत के सामने एक चुनौती है और इसलिए विकास का समर्थन करके देश को एक विकसित देश के रूप में ऊपर उठाना लक्ष्य है। संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) के चौथे लक्ष्य के अनुसार अनिवार्यताएं, जिसका उद्देश्य "समावेशी और न्यायसंगत गुणवत्ता सुनिश्चित करना" है। शिक्षा और 2030 तक सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना (पी.एस. ऐथल और शुभ्रज्योत्स्ना ऐथल, 2020)।

भारत में शिक्षा प्रणाली का अवलोकन और एनईपी-2020

भारतीय शिक्षा प्रणाली : शिक्षा प्रणाली सामाजिक विकास की नींव के रूप में सहायता करती है, ज्ञान, कौशल प्रदान करके व्यक्तियों, समुदायों और राष्ट्रों को आकार देती है। मूल्य. शिक्षा प्रणालियाँ सार्वभौमिक रूप से भिन्न-भिन्न होती हैं, जिनमें विभिन्न दर्शन, पद्धतियाँ और उद्देश्य शामिल होते हैं। शिक्षा के प्रमुख घटक प्रणाली में पाठ्यक्रम डिजाइन, शिक्षण पद्धतियां, मूल्यांकन प्रथाएं और सीखने का समर्थन करने वाला बुनियादी ढांचा शामिल है। शिक्षा सेवा करती है।

शैक्षणिक उपलब्धि से परे, बहुआयामी उद्देश्य। यह व्यक्तियों को आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान क्षमताओं और आवश्यक व्यावहारिक कौशल से सुसज्जित करता है। व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता के लिए. इसके अलावा, यह समाजीकरण को बढ़ावा देता है, मूल्यों को विकसित करता है और समग्र कल्याण और प्रगति में योगदान देता है।

शिक्षा प्रणालियों का विकास तकनीकी प्रगति, सांस्कृतिक बदलाव और आर्थिक मांगों के अनुरूप सामाजिक परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करता है। हाल ही का सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देने में सीखने की परिवर्तनकारी शक्ति को पहचानते हुए, प्रणालियाँ शिक्षा तक समावेशी और न्यायसंगत पहुंच पर जोर दे रही हैं और असमानताओं को संबोधित करना।

संक्षेप में, शिक्षा प्रणाली व्यक्तिगत सशक्तिकरण, सामाजिक प्रगति और सूचित, कुशल और विकसित करने के लिए आधारशिला के रूप में कार्य करती है। जिम्मेदार नागरिक तेजी से विकसित हो रहा है | दुनिया में सार्थक योगदान देने के लिए तैयार हैं।

संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य-4 (यूएनएसडीजी-4) : यूएनएसडीजी 4, जो समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करने और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। इस लक्ष्य का यह सुनिश्चित करें कि 2030 तक, सभी लड़कों और लड़कियों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बचपन विकास, देखभाल और पूर्व-प्राथमिक शिक्षा तक पहुंच प्राप्त हो। इसका उद्देश्य समानता सुनिश्चित करना भी है। विश्वविद्यालय सहित सभी को सस्ती और गुणवत्तापूर्ण तकनीकी, व्यावसायिक और तृतीयक शिक्षा तक पहुंच।

यूएनएसडीजी 4 और एनईपी 2020 वैश्विक टिकाऊ के साथ तालमेल बिठाते हुए सभी के लिए समावेशी, न्यायसंगत और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के सामान्य लक्ष्य साझा करते हैं। भारत के शैक्षिक परिदृश्य की विशिष्ट आवश्यकताओं और संदर्भों को पूरा करते हुए विकास एजेंडा। विकास की नींव मानी जाने वाली शिक्षा पर पर्याप्त ध्यान दिया गया। लक्ष्य सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करना था, और भारत ने बनाया नामांकन दर बढ़ाने और शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने में सराहनीय प्रगति। एनईपी 2020 का लक्ष्य शिक्षा परिदृश्य को बदलना है। भारत को छात्रों की वर्तमान जरूरतों और उभरते रोजगार बाजार के साथ बेहतर तालमेल बिठाना

होगा। यह लचीलेपन, रचनात्मकता और व्यावहारिक शिक्षा पर जोर देता है। छात्रों को 21वीं सदी के कार्यबल के लिए आवश्यक कौशल से लैस करना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक दूरदर्शी कदम है जिसका उद्देश्य देश की शिक्षा प्रणाली को लोगों की मांगों के अनुरुप बदलना है। 21वीं सदी का नौकरी बाज़ार और समाज की उभरती ज़रूरतें। यह एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र बनाने का प्रयास करता है जो नवाचार, रचनात्मकता, समावेशिता और उत्कृष्टता को बढ़ावा देता है। समता और समग्र विकास के मूल्यों को कायम रखते हुए शिक्षार्थियों को आधुनिक दुनिया की जटिलताओं से निपटने के लिए तैयार करना। इसका क्रियान्वयन शिक्षा की शक्ति के माध्यम से राष्ट्र के लिए एक उज्जवल भविष्य को आकार देने की प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

नीति का लक्ष्य लचीले और बहु-विषयक दृष्टिकोण के माध्यम से शिक्षा के विभिन्न चरणों के बीच अंतर को पाटना है। यह सहजता को प्रोत्साहित करता है। स्कूल, उच्च शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और आजीवन सीखने के बीच संक्रमण, अधिक सामंजस्यपूर्ण और एकीकृत सीखने के अनुभव को बढ़ावा देना। एनईपी 2020 शिक्षा में प्रौद्योगिकी के महत्व को भी पहचानता है। यह सीखने को बढ़ाने के लिए डिजिटल उपकरणों और संसाधनों के एकीकरण की वकालत करता है। परिणाम, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना और विशेष रूप से दूरदराज के क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच का विस्तार करना। समानता और समावेशन एनईपी 2020 के अभिन्न स्तंभ हैं। यह नीति सामाजिक भेदभाव की परवाह किए बिना सभी को समान शैक्षिक अवसर प्रदान करने का प्रयास करती है। आर्थिक पृष्ठभूमि, लिंग, या भौगोलिक स्थिति यह समावेशी शिक्षा, वंचित समूहों के लिए विशेष प्रावधानों के महत्व पर जोर देता है। प्रत्येक शिक्षार्थी को सशक्त बनाने के लिए व्यावसायिक शिक्षा का एकीकरण। इसके अलावा, नीति पाठ्येतर गतिविधियों, कला, खेल और व्यावसायिक कौशल को बढ़ावा देकर समग्र विकास की आवश्यकता को संबोधित करती है। अकादमिक शिक्षा. इस समग्र दृष्टिकोण का उद्देश्य समाज में सार्थक योगदान देने में सक्षम सर्वांगीण व्यक्तियों का पोषण करना है। शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास करना है।

अध्ययन का उद्देश्य :

* मौजूदा भारतीय शिक्षा प्रणाली का मूल्यांकन करना।
* शिक्षा प्रणाली के विभिन्न पहलुओं पर एनईपी 2020 के संभावित प्रभाव का विश्लेषण करना।
* भारतीय शिक्षा प्रणाली के अंतराल और चुनौतियों की पहचान करना।
* पिछली शिक्षा नीतियों और प्रणालियों के साथ एनईपी 2020 की तुलना करना।

क्रियाविधि : यह एक गुणात्मक अध्ययन है जो सूचना के द्वितीयक स्रोत पर आधारित है। यह अध्ययन साहित्य की समीक्षा पर आधारित है और जानकारी ली गई है। विभिन्न पत्रिकाओं, पत्रिकाओं और वेबसाइटों और प्रकाशित लेखों से जो विषय वस्तु से संबंधित हैं। इस शोध का प्राथमिक लक्ष्य होगा। एक साहित्य समीक्षा आयोजित करें. यह पहले के शोध को समझने और विश्लेषण करने में सुविधा प्रदान करता है।

शोध अध्ययनों में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषाएँ :

परिभाषाएँ	लेखक	अवधि
शिक्षा का अर्थ वैज्ञानिक स्वभाव और प्रश्नोत्तरी प्रदान करना है। जिज्ञासु कौशल जो कौशल, तार्किक तर्क को बढ़ाने में भी मदद करते हैं। छात्रों के आत्मविश्वास के रूप में।	सुश्री मान्या जैन	शिक्षा

उच्च शिक्षा लोगों को चिंतन करने का अवसर प्रदान करती है। महत्वपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक मुद्दों का सामना करना इंसानियत। उच्च शिक्षा विशिष्ट ज्ञान और कौशल प्रदान करती है।	डॉ. पीयूष पी. सोलंकी	उच्च शिक्षा प्रणाली
भारतीय शिक्षा प्रणाली एक छात्र के अंकों पर अधिक केंद्रित है। उस कौशल या योग्यता को महत्व देने के बजाय हासिल कर लिया है। निर्माण किया गया। बजाय इसके कि छात्र को प्रशिक्षित कर लंबे समय तक चलने वाला प्रशिक्षण दिया जाए। ज्ञान, शिक्षा प्रणाली छात्र के प्रतिधारण और पर आधारित है।	सुश्री एस.दिव्या	भारतीय शिक्षा प्रणाली
भारत में शिक्षा मंत्रालय ने तीन शिक्षा नीतियां पेश की हैं। आज तक: 1968, 1986, और 2020। ये नीतियां महत्वपूर्ण रुपरेखा प्रस्तुत करती हैं। देश के शैक्षिक ढांचे के लिए दिशानिर्देश और सुधार का काम किया है।	शिक्षा मंत्रालय की वेबसाइट	शिक्षा नीति
राष्ट्रीय शैक्षिक नीति (NEP-2020) भारत के सामने एक चुनौती है और इसलिए समर्थन देकर देश को विकसित देश के रुप में ऊपर उठाने का लक्ष्य , संयुक्त राष्ट्र के चौथे लक्ष्य के अनुसार विकासात्मक अनिवार्यताएँ सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी), जिसका उद्देश्य "समावेशी सुनिश्चित करना" है और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा और आजीवन सीखने को बढ़ावा देना। 2030 तक सभी के लिए अवसर"।	पी. एस. ऐथल एवं शुभ्रज्योत्स्ना ऐथल	एनईपी 2020
सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) 4 समावेशी और सुनिश्चित करना है। समान गुणवत्ता वाली शिक्षा और आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना , सभी इस लक्ष्य का उद्देश्य यह भी सुनिश्चित करना है कि सभी लड़कियां और लड़के 2030 तक प्राथमिक और माध्यमिक स्कूली शिक्षा निःशुल्क पढ़ाई करें	बेसिल गुप्ता	यूएनएसडीजी 4

संबंधित समवर्ती नीतियां और दस्तावेज़ जो एनईपी 2020 में मदद करेंगे।

क्रमांक	नीति	विवरण
	शिक्षा का अधिकार (आरटीई)	सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना , किसी भी आयु वर्ग और आर्थिक वर्ग को मौलिक अधिकार के रूप में प्रदान करना

	लड़कियों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम प्राथमिक स्तर (एनपीईजीईएल)	इसका उद्देश्य लड़कियों तक पहुंचना था, जहां संसाधन "सबसे कठिन" हैं
	राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आरएमएसए)	जमीनी स्तर पर माध्यमिक शिक्षा का विकास करना
	साक्षर भारत/प्रौढ़ शिक्षा	साक्षर समाज बनाना और लक्ष्य है अशिक्षित और नव-साक्षर 15 वर्ष और उससे अधिक उम्र का साक्षर
	राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रूसा)	उच्च शिक्षा व्यवस्था में बहुआयामी सुधार हेतु और संबंधित प्रक्रिया
	समग्र शिक्षा अभियान (एसएसए)	स्कूली शिक्षा की सुरक्षा हेतु प्रमुख कार्यक्रम न्यायसंगत शिक्षा
	विकलांगों के लिए समावेशी शिक्षा माध्यमिक चरण (आईईडीएसएस)	विकलांग/दिव्यांग छात्रों से माध्यमिक या उच्च शिक्षा में उच्च नामांकन प्राप्त करना
	जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डीपीईपी)	मुख्य पहल प्राथमिक शिक्षा को पुनर्जीवित करना है, प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का एकरूपीकरण
	शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति 2019 का मसौदा, नई शिक्षा नीति 2020	बच्चों का संज्ञानात्मक विकास के लिए और चिंतनशील प्रक्रियात्मक सक्षम करें

वैचारिक ढांचे का विकास :

* शरद बिहार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लिए शिक्षा आयोग, सरकार। भारत ने इस उद्देश्य से एनईपी-2015 तैयार किया। भारत को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नवाचार और अनुसंधान के संबंध में जनसंख्या की आवश्यकता की बदलती गतिशीलता अपने छात्रों को आवश्यक कौशल और ज्ञान से लैस करके और विज्ञान में जनशक्ति की कमी को दूर करके ज्ञान महाशक्ति, प्रौद्योगिकी, शिक्षाविद और उद्योग एनईपी की शुरुआत के पीछे का इरादा केवल एक उत्पादक के रूप में भारत का आर्थिक शोषण करना है। अंग्रेजों द्वारा कच्चा माल प्राप्त करना उनकी औद्योगिक अर्थव्यवस्था के कारण संभव हुआ। इसलिए, मुख्य जोर आत्मनिर्भरता पर था, जिसके लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा उच्च शिक्षा को महत्वपूर्ण माना जाता था।

* ममीडाला जगदेश कुमार, (2020), अध्ययन में इस बात पर जोर दिया गया कि एनईपी समयानुकूल और भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण है, जो आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देगा। प्रोत्साहन, योग्यता और सीखने को अनुभवात्मक बनाना छात्रों को आर्थिक विकास में सक्रिय योगदान देने के लिए तैयार करता है। अध्ययन भी राय दी गई कि एनईपी नवाचार, आलोचनात्मक सोच और उच्च क्रम की सोच क्षमताओं, समस्या सुलझाने की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए समग्र दृष्टिकोण है। यह निष्कर्ष निकाला गया है कि वर्तमान में HEI में तकनीकी प्रगति की कमी है, HEI में छात्रों की संख्या कम है, जिसे NEP के माध्यम से समाप्त कर दिया जाएगा। एचई में शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना।

* 1आर रशीदा बेगम, 2डीआर। ऋषिकेश यादव (2022), अध्ययन उच्च शिक्षा नीति में हाल के विकास पर केंद्रित है, एनईपी 2020 के फायदे और इससे भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली में होने वाली विभिन्न प्रगतियों की रूपरेखा तैयार की गई है। अध्ययन ने इसकी पहचान की, एनईपी के कार्यान्वयन के पीछे का उद्देश्य एकीकृत शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रारंभिक शिक्षा, के-12 और उच्च शिक्षा को एकीकृत करना है। सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए, और भारत को एक केंद्र के रूप में स्थापित करने के लिए, जन्म से वयस्कता तक

पाठ्यक्रम, वैश्विक स्तर पर उच्च शिक्षा। अध्ययन की निष्कर्ष टिप्पणी है कि एनईपी-2020 एचई को शिक्षक केंद्रित से छात्र केंद्रित में बदल देता है |

नीति के परिणामस्वरूप भारतीय मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली में सुधार हुआ और एनईपी ज्ञान आधारित समाज के विकास को बढ़ावा दे रही है और ज्ञान आधारित शिक्षा। यह अध्ययन इस उद्देश्य से आयोजित किया गया था कि मूल्य आधारित शिक्षा प्रणाली कैसे विकसित की जाए, मानवता दृष्टिकोण वाला एक समुदाय। निष्कर्ष यह है कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से छात्रों को बेहतर अवसर मिलेंगे, भविष्य में उनकी रुचि वाले क्षेत्रों में उनकी प्रतिभा का पता लगाया जा सकेगा।

* राकेश पाठक (2021), पेपर एनईपी के कार्यान्वयन के बाद छात्रों के शैक्षणिक परिणाम में सुधार के बारे में विश्लेषण करता है- 2020 और उच्च शिक्षा में संकाय प्रेरणा के वृद्धि स्तर को मापता है। पेपर आंतरिक और बाह्य कारकों की पहचान करता है जो उच्च शिक्षा संस्थान में संतुष्ट संकायों को प्रेरित करेगा। अध्ययन में मंत्रालय की वेबसाइट पर पिछले प्रकाशित स्रोतों का उपयोग किया गया है शिक्षा विभाग, भारत सरकार। यह पूरा हो गया है कि एनईपी-2020 को संकाय को प्रेरित करने की आवश्यकता है लेकिन यह ठीक से नहीं किया गया है क्योंकि एनईपी करता है, इसके लिए कोई निर्देश नहीं दिया गया है, लेकिन यह निर्दिष्ट किया गया है कि उचित प्रशिक्षण प्रदान करके, संकाय संचालित प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों में राजस्व साझा किया जाएगा, भारत में उच्च शिक्षा को प्रेरित करने के लिए संकाय बनाना।

* किरण बंगा छोकर (2010) अध्ययन भारत में सतत विकास के लिए उच्च शिक्षा में प्रमुख राष्ट्रीय प्रगति का विश्लेषण करता है, प्रोफ़ाइल उन्हें, और उनकी तुलना अन्य शैक्षिक रणनीतियों से करें जो सतत विकास के लिए शिक्षा के संबंध में उभर रही हैं। तुलना विभिन्न संस्थानों द्वारा प्रस्तावित विभिन्न पर्यावरणीय और स्थिरता शिक्षा कार्यक्रमों का मूल्यांकन भारतीय उच्चतर के आलोक में किया गया, शिक्षा के दर्शन, नीतियां और प्रथाएं। शैक्षणिक पहलों, सरकारी प्रस्तावों और शैक्षिक पहलों का विश्लेषण महत्वपूर्ण विकासों, कठिनाइयों और भविष्य में उन्नति की संभावनाओं पर जोर दें। के बीच अंतर-विषयक योग्यता का अभाव उच्च शिक्षा में कर्मचारियों और छात्रों और पारंपरिक मूल्यांकन तकनीकों के कारण इस आवश्यकता को सफलतापूर्वक लागू करना कठिन हो जाता है। के बजाय औपचारिक सरकारी कार्रवाइयों का परिणाम होने के कारण, इस क्षेत्र में सीखने के अवसर पैदा करने के कई प्रयास ज्यादातर अकादमिक रूप से प्रेरित रहे हैं और छात्र लक्ष्य और रुचियाँ।

* डॉ. पकंज पांडे और डॉ. आशीष कुमार सिंह (2020) ने समीक्षा की कि अर्थव्यवस्था और समाज के विकास के लिए उनका होना जरूरी है। शक्तिशाली दृढ़संकल्पित शिक्षा नीति आवश्यक है। भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा के क्षेत्र में प्रभुत्व स्थापित करने की क्षमता रही है। अध्ययन एक है जानने के उद्देश्य से वैचारिक चर्चा:

* भारत में शिक्षा व्यवस्था की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।

* NEP- 2020 उच्च शिक्षा से संबंधित और नई नीति की मौजूदा शिक्षा नीति से तुलना।

* अध्ययन एनईपी-1986 और एनईपी- 2020 के बीच तुलना थी।

यह निष्कर्ष निकाला गया कि एनईपी-2020 में रचनात्मकता, विविधता और अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में एनईपी-1986 की तुलना में अधिक जोर दिया गया है। आज के आधुनिक युग के लिए महत्वपूर्ण और यह भी राय दी कि एनईपी- 2020 शिक्षा क्षेत्र में एक नया सुधार लाएगा।

* वेंकटरमन (2020), का मानना है कि एनईपी-2020 वह दृष्टिकोण है जो नीति में पूरे देश के लिए है और इसके दस्तावेज़ दूरदर्शी हैं चरित्र। अध्ययन नए भारत के विकास के लिए एनईपी-2020 दस्तावेज़ का मसौदा तैयार करने में डॉ. कसुथिरंगन के काम की सराहना करता है जो प्रदान करता है, उच्च शिक्षा को मजबूत करने की क्षमता हासिल करने के लिए संस्थान, संकाय और छात्रों को प्रोत्साहित करने वाली बहु-विषयक शिक्षा को महत्व देना प्रणाली। अध्ययन ने निर्धारित किया कि एनईपी- 2020 न केवल शिक्षा क्षेत्र में बदलाव लाने की दृष्टि से है,

बल्कि राष्ट्र के विकास पर भी प्रभाव डालने की उम्मीद है।

* किरण बंगा छोकर (2010), अध्ययन में उच्च शिक्षा की भूमिका और विभिन्न शैक्षिक दृष्टिकोणों का विश्लेषण किया गया है जिसके परिणामस्वरूप टिकाऊ विकास हुआ है। भारत में विकास यह अध्ययन भारतीय उच्च शिक्षा चुनौतियों में नीतियों और प्रथाओं के आधार पर मूल्यांकनात्मक समीक्षा का है। भविष्य में विकास की संभावनाएँ। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि भारतीय शिक्षा में कुछ अनिवार्य नीतियां विकास को चुनौती देती हैं। योग्यता स्तर. लेकिन शिक्षा क्षेत्र में अंतर-विषयक नीति के कार्यान्वयन के माध्यम से टिकाऊ लक्ष्य हासिल करने का अवसर मिलता है।

भारत में शिक्षा का विकास :

* आलोक कुमार (2021) ने द्वितीयक डेटा के आधार पर खोजपूर्ण शोध किया है जिसमें उन्होंने देखा कि एनईपी-2020 का कार्यान्वयन मौजूदा शिक्षा प्रणाली में प्रगतिशील सुधार है। अध्ययन का उद्देश्य एनईपी-2020 के दिशानिर्देशों और प्रस्ताव की समीक्षा करना है। दस्तावेज़ और नीति निर्माता भारत 2.0 को कैसे देखेंगे। यह निष्कर्ष निकाला गया है कि एनईपी के कार्यान्वयन के माध्यम से यह भारतीय को नया स्वरूप देगा, शिक्षा प्रणाली छात्रों को ब्रेक लेने के बाद भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए लाभ प्रदान करके कौशल पर जोर देती है।

एनईपी- 2020 की वर्तमान स्थिति : राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 को शिक्षा को समग्र रूप से बदलने की दृष्टि से लागू किया गया है, इसमें प्रारंभिक स्तर से ही विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है। बचपन की शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक, समावेशिता, लचीलेपन और बहु-विषयक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना। एनईपी 2020 का प्राथमिक फोकस स्कूली पाठ्यक्रम का पुनर्गठन है। यह अधिक लचीले और बहु-विषयक दृष्टिकोण पर जोर देता है, आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल को बढ़ावा देना। यह नीति रटने की बजाय अनुभवात्मक शिक्षा की ओर बदलाव को प्रोत्साहित करती है। विद्यार्थी जानकारी को याद रखने के बजाय अवधारणाओं को तलाशें और समझें। कम उम्र से ही कोडिंग की शुरुआत, व्यावसायिक प्रशिक्षण, और मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर जोर महत्वपूर्ण पहलू हैं जिनका उद्देश्य सर्वांगीण व्यक्तियों का पोषण करना है।

इसके अलावा, एनईपी 2020 स्कूल के वर्षों को विभाजित करके 5+3+3+4 प्रारूप पेश करके शिक्षा प्रणाली में एक संरचनात्मक परिवर्तन का प्रस्ताव करता है। मूलभूत (उम्र 3-8), प्रारंभिक (उम्र 8-11), मध्य (उम्र 11-14), और माध्यमिक (उम्र 14-18) चरण। इस पुनर्गठन का उद्देश्य अधिक आयु प्रदान करना है- विभिन्न चरणों में छात्रों की विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करते हुए उचित और समग्र शिक्षण अनुभव। यह नीति डिजिटल शिक्षण उपकरणों के महत्व को पहचानती है और इसका उद्देश्य व्यक्तिगत शिक्षण, शिक्षक प्रशिक्षण और निर्माण के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना है, एक समावेशी शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र कोविड-19 महामारी और एनईपी के कारण ऑनलाइन और मिश्रित शिक्षण विधियों के आगमन को और बढ़ावा मिला , 2020 का लक्ष्य शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए इस गति का उपयोग करना है।

इसके अलावा, एनईपी 2020 लचीलेपन और स्वायत्तता को बढ़ावा देकर उच्च शिक्षा में बदलाव की परिकल्पना करता है। यह बहुविषयक का प्रस्ताव करता है। दृष्टिकोण, छात्रों को विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला से चुनने और स्ट्रीम के बीच सहजता से स्विच करने की अनुमति देता है। नीति भी महत्व पर जोर देती है। अनुसंधान और नवाचार का लक्ष्य, एक मजबूत अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करना और शिक्षा जगत और उद्योग के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करना है।

रिसर्च गैप : ये कमियां एनईपी 2020 की बहुआयामी प्रकृति को उजागर करती हैं, इसकी जटिलताओं को दूर करने के लिए समावेशी अध्ययन और मूल्यांकन की अपील करती हैं।

कार्यान्वयन और प्रभाव :

1. कई अध्ययनों ने एनईपी 2020 को प्रभावी ढंग से लागू करने में संभावित चुनौतियों पर प्रकाश डाला है, खासकर जमीनी स्तर पर यह भी शामिल है। बुनियादी ढांचे, संसाधन आवंटन, नीति प्रसार और प्रशासनिक क्षमता से संबंधित मुद्दे।
2. एनईपी को प्रभावी ढंग से लागू करने में शिक्षकों की भूमिका पर महत्वपूर्ण जोर दिया गया है। शोध ने इसकी आवश्यकता बताई है प्रस्तावित परिवर्तनों के लिए शिक्षकों को तैयार करने के लिए व्यापक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम, कौशल बढ़ाने की पहल और समर्थन तंत्र शिक्षाशास्त्र और पाठ्यक्रम। कई विद्वानों ने नई नीति के उद्देश्यों के अनुरुप एक संशोधित मूल्यांकन और मूल्यांकन प्रणाली की आवश्यकता पर चर्चा की है। रटने की बजाय अधिक समग्र और कौशल-आधारित मूल्यांकन दृष्टिकोण की ओर।
3. शोधकर्ता पाठ्यक्रम डिजाइन में पर्याप्त बदलावों की जांच कर रहे हैं, व्यावहारिकता, अनुकूलनशीलता आदि पर शोध चल रहा है
4. इन प्रस्तावित सुधारों की प्रभावशीलता।
5. शिक्षा में प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने पर जोर देने के साथ, डिजिटल बुनियादी ढांचे, डिजिटल साक्षरता और न्यायसंगतता के संबंध में अनुसंधान अंतराल मौजूद हैं। विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों में प्रौद्योगिकी तक पहुंच।
6. चर्चाएँ प्रस्तावित परिवर्तनों की वित्तीय स्थिरता, शिक्षा के बुनियादी ढांचे में आवश्यक निवेश और के इर्द-गिर्द भी घूमती हैं, एनईपी के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सार्वजनिक-निजी भागीदारी की भूमिका।
7. एनईपी के उद्देश्यों के साथ उच्च शिक्षा संस्थानों के संरेखण पर ध्यान केंद्रित है, जिसमें स्वायत्तता, अनुसंधान अभिविन्यास और शामिल हैं। लचीले बहुविषयक सीखने के रास्ते।
8. एनईपी की प्रगति और प्रभाव की निगरानी और मूल्यांकन के लिए प्रभावी तंत्र को परिभाषित करने में अनुसंधान अंतराल मौजूद हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि यह बना रहे अपने इच्छित लक्ष्यों को प्राप्त करने के पथ पर।

सुझाव और निष्कर्ष : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने प्रगतिशील शिक्षा के लिए एक रोडमैप तैयार किया, जिसका उद्देश्य बहु-विषयक कौशल आधारित शिक्षा प्रदान करना है। रोज़गार; 2030 तक सभी प्रकार के शैक्षणिक संस्थानों में छात्रों का नामांकन बढ़ाना। एनईपी 2020 ने नौकरी की संभावनाओं को बहुत महत्व दिया है। स्नातक इन सब पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं। इसने संचार कौशल, आईटी कौशल, विदेशी भाषा और समग्र विकास पर अधिक ध्यान दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 गुणवत्ता, स्वायत्तता, दायित्व की अवधारणाओं के आधार पर पहले की शिक्षा प्रणाली को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। निष्पक्षता, किफायती, समग्र, बहुविषयक दृष्टिकोण। एनईपी 2020 बहु-विषयक शिक्षा और सामग्री अधिभार को कम करने की वकालत करता है। समसामयिक ज्ञान, जीवन कौशल और व्यावसायिक प्रशिक्षण को शामिल करने के लिए पाठ्यक्रम की निरंतर समीक्षा और अनुकूलन अनुकूलनशीलता को बढ़ावा देगा और भविष्य के लिए तैयार स्नातक. रचनात्मक मूल्यांकन और परियोजना-आधारित मूल्यांकन को प्रोत्साहित करने से छात्रों की सच्ची समझ और अनुप्रयोग का बेहतर आकलन होगा। एनईपी 2020 में उल्लिखित उच्च शिक्षा सुधारों के लिए संस्थागत संरचनाओं में सुधार की आवश्यकता है। अनुसंधान-उन्मुख, बहु-विषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना, शिक्षा जगत और उद्योग के बीच सहयोग को बढ़ावा देने और उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने से उच्च शिक्षा की गुणवत्ता और प्रासंगिकता बढ़ेगी।

निष्कर्ष : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारत की शिक्षा प्रणाली में क्रांति लाने की अपार संभावनाएं हैं। यह भारत में शिक्षा के क्षेत्र में विकास है। आवधिक मूल्यांकन, प्रतिक्रिया तंत्र, और उभरती जरूरतों और वैश्विक शैक्षिक रुझानों के आधार पर पाठ्यक्रम में सुधार के लिए खुलापन यह सुनिश्चित करेगा कि नीति प्रासंगिक और प्रभावी बनी रहे। एनईपी- 2020 कृषि से लेकर कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक कई क्षेत्रों में व्यावसायिक विकास की आवश्यकता

को संबोधित करता है। बिजनेस वर्ल्ड समीक्षा ने सही ढंग से अपना मूल्यांकन किया, "राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 एक महत्वपूर्ण और समय पर हस्तक्षेप है जो भारतीय शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए नियत है।" परिदृश्य विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी। यह नीति व्यापक है और इसमें हमारी शिक्षा प्रणाली के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण सुधार शामिल हैं। भारत को भविष्य के लिए तैयार रहना चाहिए और एनईपी-2020 सभी इच्छुक शिक्षकों और छात्रों के लिए आवश्यक क्षमताओं के साथ तैयार होने का मार्ग खोलता है। इस नीति की दृष्टि से, "भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली शिक्षक केंद्रित से छात्र केंद्रित, सूचना केंद्रित से ज्ञान केंद्रित की ओर बढ़ रही है।" अंक केन्द्रित से कौशल केन्द्रित, परीक्षा केन्द्रित से प्रयोगात्मक केन्द्रित, शिक्षण केन्द्रित से अनुसंधान केन्द्रित, और चयन केन्द्रित से योग्यता केन्द्रित" (ऐथल और ऐथल 36)। कुल मिलाकर, यह नई एनईपी 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में लंबे समय से चले आ रहे सुधारों पर आधारित है। यह भी बहुत कुछ प्रदान करता है। ऐसे संरचनात्मक संस्थागत परिवर्तनों की आवश्यकता है जो सरकार के राष्ट्र निर्माण मेगा कार्यक्रमों और एसडीजी लक्ष्यों के साथ पूरी तरह से मेल खाते हों।

सन्दर्भ सूची :

1. https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-analysis/initiativesunder-national-education-policy-2020 (1)
2. Aithal, P. S. & Aithal, Shubhrajyotsna (2020). Higher education implementation strategies for India's National Education Policy 2020. Journal of Management, Technology, and Social Sciences, 5(2), 283- 325. DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.4301906.
3. Gupta, B., & Choubey, A.K.. Higher Education Institutions - Some Guidelines for Obtaining and Sustaining Autonomy in the Context of NEP 2020. International Journal of All Research Education and Scientific Methods, 9. www.ijaresm.com* Patel, K. J.. Educational Policies, Comparative Analysis of National Education Policies of India and Challenges. International Journal of Multidisciplinary Educational Research, 12, 67-69.
4. Sethi, S. P.. The New Education Policy 2020: Addressing The Challenges Of Education In Modern India. International Journal of Multidisciplinary Educational Research, 9, 32-37.
5. Kaurav, R. P. S., Suresh, K., Narula, S., et al.. New Education Policy, 2020: Qualitative Analysis and Twitter Mining Analysis.
6. Aithal, S., & Aithal, S.. Analysis of Higher Education in Indian National Education Policy Proposal 2019 and its Implementation Challenges. International Journal of Applied Engineering and Management Letters, 3, 1-34.
7. Smith, J.. Advancements in AI technology. Journal of AI Research, 39, 140-160.
8. New Education Policy 2020 of India: A Theoretical Analysis- Dr. Hemlata Verma* and Adarsh Kumar** International Journal of Business and Management Research (IJBMR), Review Article | Volume 9, Issue 3 | Pages 302-306 | e-ISSN: 2347-4696
9. The Future of Higher Education in India. Edited by Sudhanshu Bhushan. Springer Nature, Singapore, 2019, 328 pages, Hardback, ISBN: 9789813290600.

10. Mamidala Jagadesh Kumar (2020) National Education Policy: How does it Affect Higher Education in India?, IETE Technical Review, 37:4, 327-328, DOI: 10.1080/02564602.2020.1806491
11. Sheth,J.(2020)Webinar on "NEP 2020: Impact on Higher Education" 16th October, 2020, Ranchi 08:00 PM to 09:00 pm IIM Ranchi
12. Desai, Nishith (2021). Next Steps for Higher Education in India. The National Law Review, 12 Sept. 2021, www.natlawreview.com/article/next-steps-higher-education india.
13. Kalyani, Pawan (2020). An Empirical Study on NEP 2020 [National Education Policy] with Special Reference to the Future of Indian Education System and Its effects on the Stakeholders. Journal of Management Engineering and Information Technology, vol. 7, no. 5, Oct. 2020, pp. 1-17.
14. Kumar, Deep (2020). A Critical Analysis and a Glimpse of N ew Education Policy - 2020. International Journal of Scientific & Engineering Research, vol. 11, no. 10, Oct. ,pp. 248-253.
15. Thakur, P. & Kumar, R. (2020).Educational policies, comparative analysis of national education policies of India and challenges. International Journal of Multidisciplinary Educational Research, 10(3(5), 13-16.
16. National Education Policy 2020. Retrieved September 11, 2022, from https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/

•